S-1
CORE

TYPE OF MOTIVATION

अभिप्रेरणा का अध्ययन मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है जो प्राणी के व्यवहारों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है इसके महत्व को स्वीकार करते हुए Freud ने बताया कि मनुष्य जो भी व्यवहार करता है वह प्रेरणा से प्रभावित रहता है अतः यह समस्त व्यवहारों का प्रमुख निर्धारक है। जिसे परिभाषित करते हुए New Comb ने बताया कि "अभिप्रेरणा प्राणी की वह अवस्था है जिसमे शारीरिक शक्तियाँ संचालित हो जाती है और चयनात्मक रूप से वातावरण के किसी खास भाग की तरफ निर्देशित हो जाती है।" Motivation refers to a state of the organism in which the bodily energy is mobilized and selectively directed towards the part of the environment."

मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरण को दो भागों में बांटा -

A. Inborn motives B. Aquired motives

A. Inborn motives -

जन्मजात प्रेरक वे है जो जन्म से ही व्यक्ति में विद्यमान रहते है तथा जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवित रहना संभव न हो। ऐसे अभिप्रेरकों को जन्मजात, जैविक या शारीरिक अभिप्रेरक कहते हैं जिसके कुछ प्रमुख निम्नलिखित है-

1. Hunger - यह एक प्रमुख Biogenic motive हैं जो व्यक्ति के लिए शक्ति का स्रोत है। किसी भी कार्य को करने के लिए शारीरिक शक्ति की आवश्यकता होती है और भोजन से ही शारीरिक शक्ति का निर्माण होता है। लेकिन प्रश्न यह है कि भूख की उत्पत्ति कैसे होती हैं और इसमें कौन सा शारीरिक संरचना का कार्य करता है? इस संबंध में किए गए अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि भूख की उत्पत्ति आमाशय की मांसपेशियों में संकुचन से होती है जब आमाशय खाली रहता है तो इसमें संकुचन तेजी से होता है फलतः पेट दर्द होता और इसके साथ ही भूख का अनुभव होता है। मनोवैज्ञानिकों ने भूख के इस कारण को स्थानीय उत्तेजना का सिद्धांत कहा। Cannon & Washburn के अध्ययन से इसकी पुष्टि होती है

लेकिन आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन के आधार पर एक नए सिद्धांत का विकास किया जो केन्द्रीय सिद्धांत के नाम से जाना जाता है इस सिद्धांत के अनुसार Hypothalamus में कुछ ऐसे केन्द्र होते है जो भूख को नियंत्रित करते है।

Scanned with CamScanner

इस संबंध में Friedman & Sticker 1976 ने बताया कि जब व्यक्ति कई घंटों से भोजन नही करता है तो इसमें ईंधन की आपूर्ति स्वतः कम हो जाती है और Liver के metabolic process में परिवर्तन होता है जिसकी सूचना मस्तिष्क के Hypothalamus को होती है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति को भूख लगती है। विद्वानों ने बताया कि Hypothalamus के ventromedial केन्द्र को नष्ट कर देने से प्राणी अधिक खाने लगता है और जब इस भाग को उत्तेजित किया जाता है तो प्राणी खाना छोड़ देता है इसी तरह जब Hypothalamus के lateral केन्द्र को नष्ट कर देने पर ventromedial के ठीक विपरीत क्रियाएं उत्पन्न होती है।

ii. Thirst – यह भी जन्मजात अभिप्रेरक है पहले विद्वानों का मानना था कि कंठ जीभ के सूखने से प्यास की अनुभूति होती है जिसे प्यास का स्थानीय उत्तेजन का सिद्धांत कहा जाता है इस विचार का प्रतिपादन Cannon ने किया था लेकिन बाद के मनोवैज्ञानिकों ने इसका विरोध करते हुए बताया कि मुह का सुखापन प्यास का कारण नही बल्कि यह प्रारंभिक कारक के रूप मे कार्य करता है।

अब प्यास की व्याख्या केन्द्रीय सिद्धांत के आधार पर करते हुए बताया गया कि Hypothalamus के lateral area से इसका नियंत्रण होता है। जब शरीर के cell को पानी की आवश्यकता होती है तो Hypothalamus के स्नायुकोश इसका संकेत देते है ऐसे स्नायुकोश osmo receptor कहा जाता है इस तरह के प्यास को कोशिका निर्जलन प्यास कहते है। इसतरह रक्त के आयतन मे कमी आने पर रक्तचाप घट जाता है जिसके प्रभाव से Kidney से रेनिन नामक पदार्थ निकलता है और जटिल क्रिया के द्वारा एसे पदार्थ का निर्माण करता है जो रक्त मे मिलकर प्यास को उत्पन्न करता है।

iii. Sex – यह भी जैविक अभिप्रेरक है लेकिन यह भूख और प्यास से अलग है क्योंकि भोजन और जल से वंचित रहकर प्राणी जीवित नही रह सकता है जबकि आजीवन यौन बंधन से जीव के जीवन और स्वास्थ्य को कोई क्षति नही पहुंचती। लेकिन इतना तो अवश्य है कि Sex भी भूख तथा प्यास की तरह स्पष्ट शारीरिक तनाव एवं अन्य प्रक्रियाएं उत्पन्न करता है जिसका सञ्चालन मस्तिष्क के द्वारा होता है फलतः Sex भी जैविक प्रेरक माना जा सकता है।

विद्वानों ने दो तरह के शारीरिक आधारों - Harmonal factor तथा sex motive के Brain factor के रूप में इसकी व्याख्या की।

महिलाओं के sex gland को ovary डिंबग्रंथी तथा पुरुष के sex gland को testical अंडग्रंथी कहा जाता है। इन दोनों ग्रंथियों के अतिरिक्त पियुष ग्रंथी से भी female तथा male Harmone निकलते हैं। female harmon में estrogens एस्ट्रोजेन्स तथा male harmone में testosteron टेस्टोस्टेरोन प्रमुख है।

रक्त में estrogens की मात्रा अधिक होने से स्त्रियों में गौण लैंगिक गुण जैसे - मासिक धर्म, स्तन में वृद्धि आवाज में परिवर्तन आदि विकसित होते हैं जबकि मादा पशुओं में estrogen की वृद्धि से वे sexual हो जाते हैं और वे sexual activity के लिए तैयार होकर नर पशुओं की तरफ जाने लगते हैं। लेकिन Human female में पशुओं जैसा व्यवहार नहीं पाया जाता है। इस संबंध में Bencroft 1978 ने बताया कि मासिक धर्म समाप्ति के 13-14 दिन के बाद कुछ महिलाओं में sexual activity तीव्र पायी जाती है जबकि कुछ महिलाओं में मासिक धर्म उम्र समाप्ति के बाद भी लैंगिकता पायी जाती है तो स्पष्ट है उसके आदत या मनोवृत्ति जैसे कारकों का प्रभाव पड़ता है।

कुछ विद्वानों ने Brain factor के आधार पर sex को स्पष्ट करने का प्रयास किया। Vaughan & Fisher 1962 ने बताया कि जब व्यक्ति के Hypothalamus को नष्ट कर दिया जाता है तो उसमें sexual activity नहीं पायी जाती है लेकिन जब इसे उत्तेजित किया जाता है तो यह activity बढ़ जाती है।

iv. Sleep - नींद भी एक प्रमुख जैविक अभिप्रेरक है क्योंकि यदि व्यक्ति को लम्बे समय तक सोने नहीं दिया जाएगा तो या तो वह मर जाएगा या तो उसके विभ्रम, बौद्धिक अक्षमता तथा अन्य असामान्य लक्षण विकसित हो जाएंगे। नींद की अवधी भिन्न-2 उम्र के लोगों में भिन्न-2 पायी जाती है। छोटे बच्चों के लिए यह अवधी 18-22 घंटे युवक के लिए 6-8 घंटे तथा बड़ों के लिए 5-6 घंटा निद्रा अवधी पायी गयी है। थकान के कारण नींद जल्द आती है कार्य करने से शक्ति का ह्रास होता है जिसको प्राप्त करने के लिए सोना आवश्यक हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने Hypothalamus, thalamus तथा reticular formation को नींद का नियंत्रण केन्द्र माना है तथा बताया कि इन केन्द्रों के

किसी प्रकार की क्षति या घाव होने से निद्रा बाधित हो जाती है।

v. Maternal drive - मातृक प्रणोदन की चर्चा भी जैविक अभिप्रेरक के अंतर्गत की जाती है देखा जाता है कि मां अपने बच्चों के प्रति आकर्षित होकर उसका पालन-पोषण तथा रक्षा करती है इस व्यवहार को उत्पन्न करनेवाले प्रेरक को ही मातृक प्रणोदन कहा जाता है। चूहों में यह प्रणोदन सबसे प्रबल होता है जिसका पतन आयु के साथ-2 होता है। इसका संचालन अंतः स्त्रावी ग्रंथियों द्वारा होता है। मनुष्यों में इस संबंध में भेद-भाव पाया जाता है।

vi. Pain - कष्ट या पीड़ा से बचना एक जबरदस्त शारीरिक प्रेरणा है। जिसके द्वारा शारीरिक संतुलन बना रहता है इसके द्वारा कई संकेतों की उत्पत्ति होती है जैसे - भय, क्रोध, चिन्ता इत्यादी ये सभी संवेग शरीर को कष्टदायक स्थितियों से निकाल भगाने में सहायक होते हैं Scott 1968 के अनुसार पीड़ा के प्रेरणात्मक पक्षों पर अनुभव का भी प्रभाव पड़ता है।

B. Aquired Motive - अर्जित अभिप्रेरक वैसे प्रेरक को कहा जाता है जो व्यक्ति में जन्म से मौजूद नहीं रहता वरन अपने जीवन काल में सामाजिक रूप से अपने आपको श्रेष्ठ बनाये रखने के लिए सीखता है। ये ऐसे प्रेरक होते हैं जिसके अभाव में व्यक्ति जैविक रूप से जीवित तो रहता है परंतु सामाजिक रूप से वह मृत समान रहता है। इसे ही सामाजिक अभिप्रेरक भी कहा जाता है जिसमें कुछ प्रमुख निम्न लिखित है -

i. ~~Active~~ Achievement Motive - उपलब्धि प्रेरक का तात्पर्य ऐसे प्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए कार्य करता है। इस प्रेरक की वैज्ञानिक ढंग से खोज mc. clelland 1953 ने किया और बताया कि उपलब्धि प्रेरक प्राणी की वह ~~आवश्यकता~~ है आवश्यकता है जो ऊंचे स्तर के कार्य करने तथा उपलब्धि के स्तर को बढ़ाने के लिए कार्य करती है। mc. clelland ने इस अभिप्रेरक की माप के लिए murry द्वारा निर्मित TAT का उपयोग किया।

यह प्रेरक सभी व्यक्तियों में एक समान नहीं होता है अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि ऐसे प्रेरक का संबंध

Scanned with CamScanner

TYPE OF MOTIVATION

classmate
Date
Page

बचपन मे माता पिता द्वारा दिए गए स्वतंत्र प्रशिक्षण से रहता है जिस परिवार मे बच्चों को स्वतंत्र प्रशिक्षण अधिक दिया जाता है उन बच्चों मे वयस्क होने पर उपलब्धि प्रेरक अधिक पायी जाती है। इस प्रकार इस प्रेरक मे दिशा, तीव्रता, तथा निरंतरता की विशेषता पायी जाती है जिससे प्रभावित होकर व्यक्ति का व्यवहार उसी दिशा मे होता है जिस दिशा मे उसे सफलता मिलने की संभावना रहती है।

ii. Affiliation - संबंधन भी प्रमुख सामाजिक प्रेरक है जिसे सामुदायिकता भी कहा जाता है मनुष्यों तथा अधिकतर पशुओं में भी संबंधन की क्रिया पायी जाती है। समाज मे या दूसरों के साथ रहने की प्रवृति को ही सामुदायिकता की संज्ञा दी जाती है। इसी से प्रभावित होकर मनुष्य या पशु अपने समुदाय के लोगों के साथ रहना पसंद करता है फलतः प्राणी का सामाजिक जीवन काफी मजबूत हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि शैशवावस्था की अनुभूतियां संबंधन क्रिया को प्रभावित करती है इस संबंध मे Carpenter 1942 ने बंदरो के बच्चों पर तथा Ashida 1964 ने चूहों के बच्चों पर इसका अध्ययन कर समर्थन किया। संबंधन व्यवहार सभी प्राणियों मे एक समान नही बना रहता है। क्योंकि वातावरण की घटनाओं मे परिवर्तन होने के साथ-2 संबंधन व्यवहार मे भी परिवर्तन आ जाता है।

iii. Approval Motive - अनुमोदन प्रेरक भी एक सामाजिक प्रेरक है। प्रायः व्यक्ति अपने समाज मे उसी व्यवहार को करता है जिसके लिए उसे सामाजिक स्वीकृति मिलती है तथा वैसे व्यवहारों से बचना चाहता है जिसकी स्वीकृति समाज द्वारा नही मिलती है यह प्रवृति बच्चों तथा किशोरो मे अधिक पायी जाती है यूं तो यह प्रवृति वयस्कों मे भी पायी जाती है लेकिन वयस्क इस प्रवृति को दबा लेते है। अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि जिस व्यक्ति मे यह Motive अधिक होता है वे सामाजिक दबाव के सामने जल्द मुड़ जाते है ये पुराने नियमों को अधिक मानते है तथा इनमे जोखिम उठाने की प्रवृति भी कम पायी जाती है। इस Motive का प्रभाव Conditioning और प्रत्यक्षणात्मक रक्षा पर भी पड़ता है

iv. Power or Status ~~and~~ Seeking Motive - सत्ता या पद प्राप्ति प्रेरक यह एक ऐसा सामाजिक प्रेरक है जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों पर अपना प्रभुत्व बनाये रखता है। Feldman ने बताया कि दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित करने तथा उसे अपने ढंग से मोड़ने की क्षमता को ही

Scanned with CamScanner

सामाजिक सत्ता कहा जाता है यह प्रवृत्ति सभी व्यक्तियों में एक समान नहीं पायी जाती है तथा स्त्रियों में सत्ता की आवश्यकता पुरुषों की अपेक्षा कम होती है। इस प्रेरक की अभिव्यक्ति व्यक्ति के यौन सामाजिक आर्थिक स्तर परिपक्वता का स्तर तथा इस अभिप्रेरक को उत्पन्न करने में डर इत्यादि पर यह निर्भर करता है समाज में कुछ व्यक्ति इस motive की अभिव्यक्ति दूसरों को धोखा देकर तथा चालाकी तरीके से करते हैं अतः यह एक ऐसा अभिप्रेरक है जिससे प्रभावित होकर व्यक्ति अपने व्यवहारों का संचालन करता है

v. Aggressiveness motive - जब एक व्यक्ति किसी दूसरे को शारीरिक, आर्थिक या शाब्दिक रूप से क्षति पहुंचाता है तो इसे ही आक्रमशीलता के नाम से पुकारा जाता है। यह व्यवहार सभी प्राणियों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है जो वातावरण के उपस्थित कारकों द्वारा प्रभावित होता है तथा कुंठा से उत्पन्न होता है तथा वातावरण में भी कुछ ऐसे कारक होते हैं जिससे आक्रमशीलता उत्पन्न होती है

vi. Level of aspiration - किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा को ही आकांक्षा कहा जाता है जो सभी व्यक्तियों में अलग-2 पाया जाता है तथा व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों या अनुमानों के आधार पर निष्पादन के विशेष स्तर तक पहुंचने का प्रयास करता है जो उसका आकांक्षा स्तर कहलाता है Hoppe 1930 ने बताया कि जब व्यक्ति को बार-बार सफलता मिलती है तो उसका आकांक्षा स्तर बढ़ जाता है तथा जब-2 असफलता मिलती है तो आकांक्षा स्तर गिर जाते हैं जिसका प्रभाव व्यक्ति पर सदैव पड़ता है और इसीलिए प्रभावित हो कर अपने व्यवहारों को संपादित करता है।

इसप्रकार स्पष्ट है कि मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरक को दो भागों में बांटा है जैविक अभिप्रेरक व्यक्ति के अस्तित्व को बनाये रखने में मदद करता है तो सामाजिक प्रेरक व्यक्ति को सामाजिक रूप से जीवित रखता है। इन अभिप्रेरकों के अलावे वह समाज में आदा प्रतिष्ठा पाता है तथा समाज में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है इसप्रकार कहा जा सकता है कि दोनों ही अभिप्रेरकों का मानव जीवन काफी महत्वपूर्ण स्थान है।

28/02/2018